# हाय ! कैसी मजबूरी

विमला गोयल

बरसात का मौसम, आसमान पर छाए घने बादल। जब सुबह सात बजे आने वाली लक्ष्मी साढ़े आठ बजे तक नहीं आई तब मेरा माथा ठनका। शायद वह फिर बीमार पड़ गई है और दो-चार दिन मुझे ही बर्तन, झाड़ू करनी होगी, ऐसा सोच ही रही थी कि दर्वाजा खुलने की आवाज आई और लक्ष्मी जल्दी-जल्दी आती दिखाई दी। उसका मुंह सूजा सा लगा, शायद बुखार था। मैंने कहा—"लक्ष्मी ! आज इतनी देर से क्यों आई ?" वह कराहती हुई बोली—"का करी बहू जी, संझा हिया से गई रही, तेइसे बुखार चढ़ आया। ऊपर से यह पानी हमका रुला दिहिस। रातभर झुग्गी में पानी टपकत रहन और रातभर हम खटिया इधर से उधर करत रहिन। पनिये ने आंख लगन नहीं दी।"

उसे डर था कि बहूजी उसकी छुट्टी न कर दें। वह आगे बोली—"हम बिटिया को लिवाए लाए हैं, अब हिन सब काम निपटा लेवत हैं।"
यह बिटिया जिसका नाम शकुन था उसकी स्वर्गवासी बेटी उसे सौंप गई थी। अब फिर से पालो-पोसो एक बिटिया को। मुझे उस पर बड़ा तरस आया। मैंने तुरंत उसे चाय बनाकर दी और साथ में दर्द की गोली भी और कहा तू बैठकर सुस्ता ले।
तेरी शकुन मेरे साथ काम कर लेगी। 9 वर्ष की शकुन अपने नन्हें हाथों से बर्तन मलने लगी।
मैं सोचने लगी भगवान विष्णु ने अपनी लक्ष्मी को यह दरिद्रता भुगतने क्यों भेजा है ?

एक महीने पहले मेरी पुरानी महरी कुछ निजी कारणों से काम छोड़कर चली गई थी।
ब्याह के बाद पति से न पटने के कारण वह अपने भाई के पास रहकर गुजारा कर रही थी। उसने हमारे यहां दो साल काम किया। वह बताती थी कि उसका अपने पति से समझौता हो गया है और अब वह ससुराल में रहेगी। उसका गृहस्थ जीवन सुखी हो जाएगा, यह जानकर मैंने उसे सहर्ष विदा कर दिया था।

उसके बाद लक्ष्मी आई। सबसे पहली बार मिली तो मुझे यक़ीन नहीं आया कि उसके शरीर में ज़रा भी जान है। मिट्टी के रंग में रंगी मोटी मर्दानी धोती में लिपटा हड्डियों का ढांचा, सूखी कलाइयों में स्टील की चूड़ियां, मेरे मुंह से निकला "नहीं, तुझ से काम नहीं होगा।" जवाब में उसने कहा कि वह सब काम कर लेगी, उसे काम की बड़ी ज़रूरत है।
मैं कुछ देर असमंजस में रही। कामवाली की मुझे भी सख्त ज़रूरत थी, दोनों ज़रूरतमंद थे, इसलिए लक्ष्मी मेरे यहां काम करने लगी। एक दो और महरियां काम की तलाश में आईं। लक्ष्मी कहती—"हमका न हटाई, बहूजी ! हम बहुत दुःखी हन। आपन तो भूखी-प्यासी रह सकित हैं, पर नन्हीं नातिन को भूखी नहीं देख सकित।"

मैंने पूछा—"तुम्हारा कोई बेटा नहीं है ?" यह सुनते ही वह रोने लगी। मैं सकपका गई कि बेकार बेटे का किस्सा छेड़कर उसका जी दुखाया।
शायद उसका कोई बेटा रहा होगा जो अब नहीं है। उसने धीरे-धीरे बताया कि उसके चार बेटे हैं और सबके ब्याह हो गए हैं। पर पिता के मरने के बाद वे मां की कोई मदद नहीं करते, बल्कि बुरा-भला कहते हैं। सब इतने कठोर हैं कि बिना मां की बच्ची अपनी भांजी को भी जब तब पीट देते हैं।
उसने बताया कि उसे कई जगह अच्छे काम मिले, पर कमज़ोर शरीर के कारण छूट गए।
"का करी, इस पापी शरीर का ?"

उससे कुछ भी फालतू काम कहने में संकोच लगता है। रसोई में बर्तन निकालते समय ध्यान रखती हूं कि उसके बूढ़े शरीर को अधिक काम न करना पड़ जाए। उससे काम तो कराना पड़ता है, पर उसे देखकर मन रो उठता है। कई बार सोचती हूं कि उसे हटा दूं। उसका कष्ट उठाकर काम करना देखा नहीं जाता।

मैं बड़े धर्म संकट में हूं। यदि इसके कमजोर बूढ़े शरीर पर तरस खाकर उससे काम कराना कर दूं तो उसका और उसकी नन्हीं बच्ची का स सा सहारा भी छूट जाएगा। न तो उसे हटाते ब है, न ही उसके आए दिन के नागों के कारण मु काम संभलता है। रात को जब पानी की बौछा जलतरंग का संगीत पैदा करती है तब मुझे अना लक्ष्मी अपनी खटिया उठाए झुग्गी के एक कोने दूसरे कोने में घूमती नजर आती है। तब मैं इंद्र देवता से प्रार्थना करती हूं कि कृपा कर वर्षा बंद दो, ताकि लक्ष्मी सो सके, वरना उसे फिर बुखा चढ़ आएगा और मुझे फिर बर्तन मलने पड़ेंगे।

मैं सोचती हूं सुबह से शाम तक अनगिनत क का सिलसिला। लक्ष्मी की बीमारी का डर! क्या मैं लक्ष्मी से काम लेना बंद कर दूं? एक स महरी रख लूं, पर कभी बूढ़ी लक्ष्मी का चेहरा, नन्हीं शकुन का चेहरा आंखों के सामने घूम जा मुझे हालात से समझौता करके चलना होगा।